Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

राज्य राजनीति में राज्य नेतृत्व परिवर्तय की भूमिका का विश्लेषण

डॉ. मनोज कुमार भारी*

* सह आचार्य (राजनीति विज्ञान) आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय राज्य राजनीति में राज्य नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यमंत्री राज्य की राजनीति में मुख्य व्यक्ति होते हैं और उनका कार्य नीति निर्माण, प्रशासन, और राज्य के हितों का प्रतिनिधित्व करने में होता है। उनकी नेतृत्व शैली और शासन में प्रभावशीलता राज्य के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देती है। मुख्यमंत्री चुनाव के दौरान एक महत्वपूर्ण संपत्ति है, उनके नेतृत्व से पार्टी के भाग्य पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है, जैसे कि वे संकटों को कैसे संभालते हैं और राजनीतिक विवादों का प्रबंधन करते हैं। राज्य नेतृत्व की अनुभव, संवाद क्षमता और क्षेत्रीय मुद्दों के संबोधन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय राजनीति में मुख्यमंत्रियों के कार्यकाल के दौरान उनकी कार्यशैली और प्रभावशीलता उनकी पार्टी और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देती है।

राज्यों में मतदाताओं की प्राथमिकताएं और मतदान पैटर्न का अंतर विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है। इसलिए, नेतृत्व बदलने या बनाए रखने का निर्णय लेते समय प्रदेश के राजनीतिक संदर्भ को ध्यान में रखना जरूरी होता है। पश्चिम बंगाल में पुराने राजनैतिक दलों की लंबी शासनकाल एक विकल्पहीन सिद्धांत का परिचायक है, जो नेतृत्व परिवर्तन को अधिक मुश्किल बनाता है। विपक्षी दलों के पास सरकार में प्रवेश का सामर्थ्य बनाए रखने के लिए अधिक विकल्प होना चाहिए। राज्यों में राजनीतिक दिशा और अपेक्षाएं विकसित नेतृत्व के माध्यम से बदलती हैं। भारतीय राजनीति में पूर्व मुख्यमंत्रियों के पदमुक्ति के विभिन्न कारण है –आंतरिक प्रतिद्वंद्विता, पार्टी नेतृत्व में बदलाव, क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय फोकस और वैचारिक बदलाव जैसे हैं।

शब्द कुंजी – राजनीतिक गठबंधन, राजनीतिक प्रासंगिकता, राजनीतिक रणनीतियाँ, राजनीतिक चालबाजी, अंतर–पार्टी गतिशीलता –प्रबंधन, वित्त पोषण, सुव्यवस्था प्रबंधन।

प्रस्तावना – भारतीय राजनीति में राज्य नेतृत्व परिवर्तय की भूमिका को समझने के लिए बहुआयामी कारकों की आवश्यकता है जो उनकी राजनीतिक प्रासंगिकता को प्रभावित करते हैं। नेताओं की सक्रियता और उनकी विचारशीलता उनके राजनीतिक अभिनय को महत्वपूर्ण बनाती है। भारतीय राज्य राजनीति में राज्य नेतृत्व की भूमिका का विश्लेषण शासन की गतिशीलता, राजनीतिक निर्णय लेने और राज्य सरकारों के कामकाज को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं। वे राज्य सरकार के प्रमुख होते हैं और नीति निर्माण, प्रशासन और राज्य के हितों का प्रतिनिधित्व करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। राज्य नेतृत्व, मुख्य रूप से मुख्यमंत्री, राज्य के शासन और प्रशासन के लिए जिम्मेदार होता है। प्रभावी शासन प्रदान करने, कानून और व्यवस्था बनाए रखने और सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने की उनकी क्षमता उनकी लोकप्रियता और राज्य के राजनीतिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। वह राज्य मंत्रिमंडल का नेतृत्व करते हैं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल होते हैं। नीतियों को लागू करने, गंभीर मुद्दों को संबोधित करने और चुनौतियों का जवाब देने की उनकी क्षमता की नागरिकों और राजनीतिक पर्यवेक्षकों दोनों द्वारा बारीकी से जांच की जाती है। मुख्यमंत्रियों सहित राज्य के नेता अक्सर अपने राजनीतिक प्रभाव को बनाए रखने या विस्तार करने के लिए रणनीति बनाते हैं। वे अन्य दलों के साथ गठबंधन बनाते हैं, अंतर–पार्टी गतिशीलता का प्रबंधन करते हैं, और अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए राजनीतिक चालबाजी में संलग्न होते हैं। राज्य नेतृत्व केंद्र सरकार और अन्य राज्यों के साथ व्यवहार में राज्य के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। राज्य के लिए संसाधन और वित्त पोषण सुरक्षित करने की उनकी क्षमता महत्वपूर्ण है।

राज्य राजनीति में मुख्यमंत्री अक्सर राज्य स्तर पर अपने राजनीतिक दल के भीतर एक प्रमुख नेता होते हैं। पार्टी के भीतर उनकी भूमिका, जिसमें केंद्रीय नेतृत्व के साथ उनके संबंध भी शामिल हैं, पार्टी की एकजुटता और चुनावी रणनीतियों को प्रभावित करती है। मुख्यमंत्री की लोकप्रियता और जनता की धारणा उनकी पार्टी की चुनावी संभावनाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है। मुख्यमंत्री, राज्य सरकार के प्रमुख के रूप में, राज्य की राजनीति के आधार के रूप में कार्य करते हैं। उनकी नेतृत्व शैली और शासन में प्रभावशीलता राज्य के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में सहायक होती है।

एक लोकप्रिय मुख्यमंत्री चुनाव के दौरान एक मूल्यवान संपत्ति हो सकता है। वह संकटों को कैसे संभालते हैं, चाहे प्राकृतिक आपदाएं हों, सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति हों, या राजनीतिक विवाद हों, उनके नेतृत्व और पार्टी के भाग्य पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकते हैं। राज्य के नेताओं के लिए सत्ता विरोधी भावनाओं को प्रबंधित करना एक निरंतर चुनौती

है। शिकायतों को दूर करने, उपलब्धियों को प्रदर्शित करने और मतदाताओं के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की उनकी क्षमता चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकती है। राज्य नेतृत्व को क्षेत्रीय और राज्य-विशिष्ट मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करना महत्वपूर्ण है। जिन राज्यों में गठबंधन सरकारें आम हैं, वहां गठबंधन सहयोगियों को प्रबंधित करने और विविध हितों को संतुलित करने में मुख्यमंत्री की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उनका शासन, निर्णय लेने की क्षमता, राजनीतिक रणनीतियाँ और अपने राज्य की आबादी की विशिष्ट आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को संबोधित करने की क्षमता सभी राज्य स्तर पर राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सफल राज्य नेतृत्व के परिणामस्वरूप सत्ता में एक राजनीतिक दल की निरंतरता बनी रह सकती है, जबकि असफलताओं या असंतोष के कारण चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से नेतृत्व में बदलाव हो सकता है।

मुख्यमंत्री पद के चयन के लिए निश्चित आयु सीमा एवं सुस्वस्थता, विधायकों सहित दलीय नेतृत्व का पूर्ण विश्वास तथा सहयोगी दलों की पसंदगी, कौशल-अनुभव लगभग अपरिहार्य घटक हैं, जिन्हें मुख्यमंत्री पद के लिए सामान्यत: जरूरी समझा जाता है, लेकिन ये नियम राज्य और केंद्र की परिस्थितियों के सन्दर्भ में अत्यधिक परिवर्तनीय भी हैं। इस पदधारक से यह सामान्य अपेक्षा रहती है कि वह पार्टी के विचार और गठबंधन का पालन करे, सरकार के सञ्चालन में सक्रिय रहकर सुव्यवस्था प्रबंधन की निगरानी करे, सरकार के स्थायित्व और सुरक्षा हेतु विधानसभा में बहुमत को बनाये रखे, कानून और संविधान के मानकों का पालन करे, सामान्य एवं आपात कालीन स्थितियों का प्रबंधन करे, राज्य और केंद्र सरकार के बीच सहयोगी सम्बन्ध बनाये रखे, राज्य के विकास के साथ स्वयं के दल के आदर्शों की प्राप्ति में अपेक्षानुरूप कार्य करे इत्यादि। भारतीय राजनीति में मुख्यमंत्रियों के कार्यकाल समाप्त होने के बाद उनकी भूमिकाओं या प्रभाव को उनकी पार्टियों की स्थिति और परिवर्तित राजनीतिक परिदृश्य में उनकी स्वीकार्यता से समझा जा सकता है। भारत के सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री पद पर आसीन रहे प्रकरणों को अध्ययन की सुविधा के लिए 10-13, 13-15, 15-20 तथा 20 वर्ष से अधिक कालखंड में निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है -

पवन कुमार चामलिंग- सिक्किम, सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंटय नवीन पटनायक- ओडिशा बीजू जनता दल, ज्योति बसु-पश्चिम बंगाल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), गेगोंग अपांग-अरुणाचल प्रदेश, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस,अरुणाचल कांग्रेस, यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट, ललथनहवला- मिजोरम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय वीरभद्र सिंह-हिमाचल प्रदेश, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम भारत में 20 वर्ष या अधिक समय तक राज्य के मुख्यमंत्री पद के दायित्व को संभालने वाले राजनेताओं में शामिल है।

इसी प्रकार माणिक सरकार-त्रिपुरा, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), एम करुणानिधि- तमिलनाडु, द्रविड़ मुनेत्र कड़गमय प्रकाश सिंह बादल-पंजाब, शिरोमणि अकाली दल, यशवंत सिंह परमार- हिमाचल प्रदेश, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, श्री कृष्ण सिन्हा- बिहार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नीतीश कुमार-बिहार, समता पार्टी, जनता दल (यूनाइटेड), मोहन लाल सुखाड़िया- राजस्थान, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय नेफ्यू रियो-नागालैंड, नागा पीपुल्स फ्रंट, नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टीय शिवराज सिंह चौहान- मध्य प्रदेश, भारतीय जनता पार्टीय प्रतापसिंह राणे-गोवा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, एस. सी. जमीर- नागालैंड, यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट-प्रोग्रेसिव, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय शीला दीक्षित- दिल्ली, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय रमन सिंह- छत्तीसगढ़, भारतीय जनता पार्टीय ओकराम इबोबी सिंह- मणिपुर, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय तरूण गोगोई-असम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय जोरमथंगा- मिजोरम, मिजो नेशनल फ्रंटय अशोक गहलोत- राजस्थान, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम उन मुख्यमंत्रियों में शामिल है जिन्होंने 20 वर्ष से कम परन्तु कम से कम 15 वर्ष या अधिक समय तक मुख्यमंत्री पद पर कार्य किया।

विलियमसन ए संगमा- मेघालय, ऑल पार्टी हिल लीडर्स कॉन्फ्रेंस, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, बिधान चंद्र रॉय- पश्चिम बंगाल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जे. जयललिता- तमिलनाडु, अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, एन. रंगास्वामी- पुडुचेरी, अखिल भारतीय एन.आर. कांग्रेसय नर बहादुर भण्डारी- सिक्किम, सिक्किम जनता परिषद, सिक्किम संग्राम परिषद, एन. चंद्रबाबू नायडू- आंध्र प्रदेश, तेलुगु देशम पार्टीय जानकी बल्लभ पटनायक- ओडिशा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 13 वर्ष से अधिक परन्तु 15 वर्ष से कम समय तक राज्य के मुख्यमंत्री के दायित्व का निर्वहन किया।

बिमला प्रसाद चालिहा- असम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय नरेंद्र मोदी-गुजरात, भारतीय जनता पार्टी, ममता बनर्जी- पश्चिम बंगाल, अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस, भजनलाल- हरियाणा, जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसय बंसी लाल- हरियाणा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, हरियाणा विकास पार्टीय वसंतराव नाइक- महाराष्ट्र, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, फारूक अब्दुल्ला- जम्मू और कश्मीर, जम्मू और कश्मीर नेशनल कांफ्रेंसय गोविंद बल्लभ पंत-उत्तर प्रदेश, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, ई. के. नयनार-केरल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), एम. ओ. एच. फारूक- पुडुचेरी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, द्रविड़ मुनेत्र कड़गमय बुद्धदेब भट्टाचार्य- पश्चिम बंगाल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), भैरों सिंह शेखावत-राजस्थान, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, एम. जी. रामचन्द्रन-तमिलनाडु, आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, नृपेन चक्रवर्ती- त्रिपुरा, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)य वसुन्धरा राजे- भारतीय जनता पार्टीय दिग्विजय सिंह- मध्य प्रदेश, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आदि उन मुख्यमंत्रियों में से है जो राज्य के मुख्यमंत्री के पद पर 10 वर्ष से अधिक परन्तु 13 वर्ष से कम समय तक आसीन रहे।

किसी भी राज्य में मतदाताओं की अपने मुख्यमंत्रियों या राजनीतिक दलों को बदलने की इच्छा या अनिच्छा विभिन्न कारकों से प्रभावित हो सकती है। राजनीतिक प्राथमिकताएं और मतदान पैटर्न मतदाताओं के बीच व्यापक रूप से भिन्न हो सकते हैं, और पूरे राज्य के मतदाताओं के बारे में सामान्यीकरण में सावधानी की आवश्यकता होती है। उक्त तथ्यों का विश्लेषण करें तो पाएंगे कि पश्चिमी बंगाल में आजादी के बाद केवल इस सूची में शामिल 4 मुख्यमंत्रियों ने लगभग 60 वर्ष तक शासन किया, जिससे प्रतीत होता है कि पश्चिमी बंगाल का जनमानस नेतृत्व परिवर्तन के मसले पर या तो बहुत रूढ़िवादी है या फिर उसके पास विकल्पों का अभाव एक स्थाई कारक है या सत्तारूढ़ दल जमीनी स्तर पर विपक्ष के पैर जमने ही नहीं देता अर्थात वहां विपक्षी संस्कृति का लोकमानस एवं राजनीति दोनों में पूर्ण अभाव है. पश्चिम बंगाल में कई वर्षों तक वाम मोर्चा शासन का इतिहास रहा है, उसके बाद तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का शासन रहा है। सामान्यत: नेतृत्व बनाए

रखने या बदलने का निर्णय लेते समय मतदाता अक्सर किसी पार्टी के ट्रैक रिकॉर्ड और प्रदर्शन पर विचार करते हैं। दिल्ली से भौगोलिक दूरी, भाषाई भिन्नता के अलावा 1977 के बाद उस समय तक की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दायरा सीमित हो जाने पर क्षेत्रीय दलों ने ठीक दक्षिणी भारतीय राज्यों की भांति राज्य में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया और लोक मानस में भी राज्य स्तरीय विषयों में क्षेत्रीय दलों से ही आकांक्षाओं की पूर्ति की स्थायी मनोवृत्ति ने घर बना लिया. वहाँ के मतदाता अक्सर स्थानीय मुद्दों से प्रभावित रहते हैं अर्थात राष्ट्रीय मुद्दे उनके राज्य सरकार के चयन में महत्वपूर्ण नहीं हैं और ज्योति बासु जैसे मुख्यमंत्री या राजनीतिक नेता की लोकप्रियता ने मतदाताओं की राय को बहुत प्रभावित किया हैं, यहाँ एक मजबूत और करिश्माई नेता के लिए बसू ने दीर्घकालिक समर्थन प्राप्ति का बीज मुख्यमंत्रियों में बो दिया है। यहाँ एक कारक यह भी संभव है कि बंगाली मतदाताओं के पास कोई विश्वसनीय विकल्प नहीं है या सामान्यतया राज्य राजनीति में सरकार न बदलने की प्रवृत्ति के कारण विपक्ष बहुत बिखरा रहा हुआ है, तो ऐसा विपक्ष भी सत्ताधारी के साथ हित साधना के विकल्प को चुन सकता हैं।

योगेन्द्र यादव ने 2021 में लिखा था कि वे चिन्तित हैं 'इसलिए नहीं कि मैं विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित हूं कि यह चुनाव कौन जीतता है या कौन हारता है...वामपंथ का खात्मा और कांग्रेस का लगातार अप्रासंगिक होना अब बंगाल की राजनीति का खाका बन गया है।'[1] वे पूर्व दृष्टान्त से निगमित करते हैं कि 'मुझे चिंता है क्योंकि पश्चिम बंगाल में पहले से ही एक मिसाल मौजूद है। 1972 में हुए कुख्यात विधानसभा चुनाव को व्यापक रूप से निष्पक्ष चुनाव कराने के भारत के अपेक्षाकृत साफ रिकॉर्ड पर एक धब्बा माना जाता है। उस चुनाव में, इंदिरा गांधी की कांग्रेस - इसे उस समय कांग्रेस (आर) कहा जाता था - ने भारी जीत दर्ज की और 280 सदस्यीय विधानसभा में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) या सीपीआई (एम) को केवल 14 सीटों पर सीमित कर दिया। यदि आप वाम समर्थक मीडिया और शिक्षाविदों की मानें तो पूरा चुनाव 'धांधली' था।...'कांग्रेस ने कठोर रणनीति का इस्तेमाल किया, मतदाताओं को कथित तौर पर दूर कर दिया गया और बूथ पर कब्जा कर लिया गया।'[2] इसी प्रकार राज्य में प्रतिद्वंद्वी भाजपा के पास क्षेत्रीय क्षत्रप खड़ा न कर पाने की स्थिति भी इसी मत को पुष्ट करती है की वहां मजबूत विपक्ष खड़ा करने में सशक्त राष्ट्रीय दल भाजपा आज भी सफल नहीं हो पाई. राज्य में उड़ीसा की बीजेडी की ही भांति जमीन स्तर पर क्षेत्रीय दल टीएमसी कैडर की मजबूत रणनीति को बेअसर करने के लिए राष्ट्रीय दलों के पास कोई साधन नहीं है।

पूर्वोत्तर राज्यों में त्रिपुरा, मणिपुर, सिक्किम, मिजोरम, नागालैंड इत्यादि में छोटे आकार तथा एक एक लोक सभा सीट होने के कारण राष्ट्रीय नेतृत्व की वहाँ की राजनीति में अरुचि के कारण सरकारों को एंटी इन्क्म्बेन्सी का सामना नही करना पड़ता, वहीं इन राज्यों की सरकारें दलीय प्रतिबद्धता की बजाय अपनी सरकार को बचाए रखने के लिए राष्ट्रीय नेतृत्वकारी दल से समझौता कर लेती है तथा इस प्रकार निरंतर सत्तासीन रहती है।

भारतीय राजनीति में कौशल, अनुभव युक्त मुख्यमंत्री के पद पर आसीन रहते या रह चुके शक्तिशाली दावेदारों के पदमुक्ति के दृष्टांत बहुत हैं, जिनसे राजनीति के कुछ सामान्य नियम भी निर्मित किये जा सकते हैं. किसी शक्तिशाली दावेदार के बड़े कद के बावजूद भी पदमुक्त किया जाना या पदासीन न किया जाना, अनेक घटकों पर निर्भर करता है यथा आयु सीमा को पार करना, विधानसभा की सदस्यता न रहना, पार्टी के नेतृत्व का समर्थन न रहना, अपने राज्य या क्षेत्र में प्रशंसा और प्राथमिकता खो देना, परिवर्तित राजनीतिक परिस्थितियों से दल के सत्ता में रहने के बावजूद सहयोगी दलों का नापसंद किया जाना इत्यादि. भारतीय राजनीति में शक्तिशाली पूर्व मुख्यमंत्रियों के दरकिनार कर दिए जाने की परिघटना को बहुधा परिलक्षित होते हुए देखा गया है, ऐसे ही उदाहरणों और संदर्भों से राज्य राजनीति के शीर्ष नेतृत्व की कमान दिए जाने के सन्दर्भ में कुछ सामान्य नियमों की स्थापना किया जाना संभव है-

शक्तिशाली पूर्व मुख्यमंत्रियों को दरकिनार करने का एक सामान्य कारण अंतर दलीय प्रतिद्वंद्विता है। यदि किसी पार्टी में कई प्रभावशाली नेता हैं, तो आंतरिक सत्ता संघर्ष हो सकता है। ऐसे मामलों में, पार्टी आलाकमान एक नेता को दूसरे नेताओं पर प्राथमिकता देने का विकल्प चुन सकता है, जिससे कुछ पूर्व मुख्यमंत्रियों को दरकिनार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सोनिया गांधी और शरद पवार जैसे नेताओं के बीच प्रतिद्वंद्विता के कारण कुछ प्रभावशाली मुख्यमंत्रियों को किनारे कर दिया गया. पृथ्वीराज चौहान ने 2010 से 2014 तक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में काम किया, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आइएनसी) के सदस्य थे और सोनिया गांधी के करीबी थे, लेकिन उनके और शरद पवार के बीच मतभेदों से 2014 में मुख्यमंत्री के पद से उन्हें हटना पड़ा। इसी प्रकार अशोक चव्हाण, जो महाराष्ट्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक रहे है। उन्होंने 8 दिसंबर 20083 से 9 नवंबर 2010 तक महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। 9 नवंबर 2010 को, कांग्रेस पार्टी ने उन्हें आदर्श हाउसिंग सोसाइटी घोटाले से संबंधित भ्रष्टाचार के आरोपों पर पद से इस्तीफा देने के लिए कहा। नवंबर 2008 के मुंबई हमलों के बाद, विलासराव देशमुख ने नैतिक जिम्मेदारी ली और इस्तीफे की पेशकश की, जिसे पार्टी ने स्वीकार कर लिया और चव्हाण को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में चुना गया।[4] 2009 में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने एक बार फिर चव्हाण को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में नामित किया।

पार्टी नेतृत्व में बदलाव या क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय फोकस: पार्टियों को अक्सर क्षेत्रीय अपील वाले नेताओं और राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाले नेताओं के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता होती है। यदि पार्टी के लक्ष्यों का दायरा अधिक राष्ट्रीय है, तो मुख्य रूप से अपने राज्य की राजनीति पर ध्यान केंद्रित करने वाले पूर्व मुख्यमंत्रियों को दरकिनार किया जा सकता है। उदाहरणत: उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को, जब उनके बेटे अखिलेश यादव ने पार्टी की छवि के आधुनिकीकरण का लक्ष्य रखा तो समाजवादी पार्टी के भीतर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अखिलेश यादव ने अपने पिता मुलायम सिंह यादव के साथ गठबंधन करने वाले नेताओं को दरकिनार करते हुए पार्टी नेता और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद संभाला।

वैचारिक बदलाव: पार्टियां कभी-कभी वैचारिक बदलाव या रीब्रांडिंग प्रयासों से गुजरती हैं। जिन पूर्व मुख्यमंत्रियों की विचारधारा पार्टी की नई दिशा के साथ मेल नहीं खाती, वे खुद को हाशिए पर पा सकते हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) में वैचारिक बदलाव देखा गया है और जो नेता पुराने मार्क्सवादी सिद्धांतों का पालन करते हैं, उन्हें कभी-कभी अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वालों के पक्ष में दरकिनार कर दिया

गया है। गठबंधन सरकार में, विभिन्न दलों के पूर्व मुख्यमंत्रियों को जटिल सत्ता-साझाकरण व्यवस्था से गुजरना पड़ सकता है। इससे उनकी प्रभाव जमाने की क्षमता सीमित हो सकती है और परिणामस्वरूप उन्हें दरकिनार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए राज्य स्तर पर गठबंधन सरकारों में, पूर्व मुख्यमंत्रियों को अक्सर अपने गठबंधन सहयोगियों के एजेंडे की सीमाओं के भीतर काम करना पड़ता है, जो उनकी स्वायत्तता और प्रभाव को सीमित कर सकता है। उम्रदराज पूर्व मुख्यमंत्रियों को अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, खासकर अगर पार्टी के भीतर पीढ़ीगत बदलाव की आवश्यकता हो, काफी बार पुराने नेताओं को दरकिनार करते हुए युवा नेताओं को प्रमुख भूमिकाएँ निभाने के लिए पदोन्नत किया जाता है, जैसे कर्नाटक में जनता दल (सेक्युलर) पार्टी में एच.डी. देवगौड़ा से नेतृत्व परिवर्तन करके बेटों एच.डी. कुमारस्वामी और एच.डी. रेवन्ना ने पीढ़ीगत परिवर्तन को प्रतिबिंबित किया। गठबंधन सरकारों वाले राज्यों में, छोटे गठबंधन सहयोगियों के पूर्व मुख्यमंत्रियों को प्रमुख पार्टी के लोगों की तुलना में खुद को सीमित राजनीतिक ताकत मिल सकती है। उनके नीतिगत निर्णय और एजेंडे पर बड़े गठबंधन साझेदार का प्रभाव पड़ सकता है, जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर में भाजपा और पीडीपी की गठबंधन सरकार में पीडीपी की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती को भाजपा की तुलना में अपने एजेंडे पर जोर देने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

लगभग हर बार दल एवं मुख्यमंत्री परिवर्तित करने वाली उड़ीसा की जनता ने बीजू जनता दल को 4 बार लगातार विजयी बनाते हुए नवीन पटनायक को अपना मुख्यमंत्री चुना, जबकि इस दौरान भी केंद्र सरकार के लिए जनता के मूड और भावनाओं में बदलाव आते रहे । ज्योति बासु और नरेन्द्र मोदी के प्रकरण भी इसी प्रतिमान के अनुपम उदहारण हैं. मजबूत क्षेत्रीय नेता राष्ट्रीय स्तर पर चुनौतियों का सामना करने पर भी अपना प्रभाव बनाए रख सकते हैं, दिल्ली की अस्थिर सरकारों के बीच शीला दीक्षित का 98 से 2013 तक लगातार 3 बार मुख्यमंत्री बनना भी ऐसा ही उदाहरण है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि राजनीतिक गतिशीलता लगातार विकसित हो रही है और विशिष्ट परिस्थितियों और विकास के आधार पर व्यक्तिगत मामले भिन्न हो सकते हैं।

पार्टी अनुशासन और वफादारी: भारतीय राजनीति में सख्त पार्टी अनुशासन और वफादारी बनाए रखना सर्वोपरि है। पूर्व मुख्यमंत्री जो सार्वजनिक रूप से अपनी ही पार्टी या उसके नेतृत्व की आलोचना करते हैं, वे खुद को दरकिनार कर सकते हैं क्योंकि उनके कार्यों को पार्टी की एकता के लिए हानिकारक माना जा सकता है। उदाहरण लिए पूर्व मुख्यमंत्रियों, यशवंत सिन्हा और शत्रुघ्न सिन्हा जैसे नेताओं को पार्टी के नेतृत्व और निर्णयों की खुलेआम आलोचना करने के लिए भाजपा के भीतर परिणाम भुगतने पड़े।

राजनीतिक गठबंधन: राजनीतिक गठबंधन का गठन, विशेषकर राष्ट्रीय स्तर पर, भूमिका को प्रभावित कर सकता है और पूर्व मुख्यमंत्रियों की प्रासंगिकता. पार्टियों को गठबंधन सहयोगियों को समायोजित करने की आवश्यकता हो सकती है, जो व्यक्तिगत नेताओं की प्रमुखता को प्रभावित कर सकता है। पार्टी के नियम और संरचनाएं भी पूर्व मुख्यमंत्रियों की भूमिका को प्रभावित कर सकती हैं। कुछ पार्टियों में सख्त पदानुक्रम और निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ होती हैं जो क्षेत्रीय नेताओं की स्वायत्तता को सीमित करती हैं। उदाहरणत: भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में एक केंद्रीकृत निर्णय लेने की संरचना है, जो पार्टी के राष्ट्रीय एजेंडे में क्षेत्रीय नेताओं की भूमिका को प्रभावित करती है। ये अतिरिक्त कारक भारतीय राजनीति की जटिलता को और स्पष्ट करते हैं और बताते हैं कि कैसे पूर्व मुख्यमंत्री एक गतिशील परिदृश्य को पार करते हैं।

व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण: पूर्व मुख्यमंत्रियों का व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण उनकी राजनीतिक गतिविधियों पर प्रभाव डाल सकता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं या व्यक्तिगत असफलताएं राजनीति में सक्रिय रूप से शामिल होने की उनकी क्षमता को सीमित कर सकती हैं। मनोहर पर्रिकर जैसे नेताओं को स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिससे उनकी राजनीतिक भूमिकाएँ प्रभावित हुईं। स्थानीय नेताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ जमीनी स्तर पर समर्थन और संपर्क बनाए रखना महत्वपूर्ण हो सकता है। जो पूर्व मुख्यमंत्री अपनी पार्टी के जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं से संपर्क खो देते हैं, उनके लिए अपना प्रभाव कायम करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उदाहरणत: नीतीश कुमार जैसे नेताओं ने अपनी पार्टियों के भीतर मजबूत जमीनी स्तर का समर्थन हासिल किया है, जिससे उन्हें अपनी राजनीतिक स्थिति बनाए रखने में मदद मिली है।

भारतीय राजनीति में पूर्व मुख्यमंत्रियों की भूमिका और प्रासंगिकता को प्रभावित करने वाले बहुआयामी कारकों को समझने के लिए क्षेत्रीय गतिशीलता, दलीय संरचना, व्यक्तिगत नेतृत्व गुण सहित राज्य एवं प्रभावित करने वाले राज्येतर राजनीतिक परिदृश्य के समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। कुछ अन्य प्रच्छन्न कारक भी राजनीति की जटिल और लगातार बदलती प्रकृति पर प्रकाश डालते हैं, जहां राजनेताओं को अपनी राजनीतिक स्थिति बनाए रखने के लिए प्रभावों और चुनौतियों के एक जटिल जाल से गुजरना पड़ता है।

कुछ पूर्व मुख्यमंत्रियों को अपना प्रभाव बनाए रखने में चुनौतियों का सामना करना पडा, बाद के चुनावों में चुनावी प्रदर्शन का उनकी राजनीतिक प्रासंगिकता पर सीधा प्रभाव पड़ता है, लगातार चुनावी जीत उनकी स्थिति को मजबूत कर सकती है, जबकि हार उनके प्रभाव को कम कर सकती है। पूर्व मुख्यमंत्री जो संकट प्रबंधन में उत्कृष्टता रखते हैं, उदाहरण के लिए नवीन पटनायक के ओडिशा में चक्रवातों और आपदा राहत प्रयासों के प्रभावी प्रबंधन ने एक सक्षम नेता के रूप में उनकी छवि को मजबूत किया । जो पूर्व मुख्यमंत्री चुनौतियों के सामने दृढ़ और अविचल रहते हैं, वे राजनीतिक तूफानों का सामना कर सकते हैं और अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकते हैं। जिन नेताओं में खुद को पुनर्निर्मित करने और बदलते राजनीतिक परिदृश्य के साथ विकसित होने की क्षमता है, वे प्रभावशाली भूमिका निभाना जारी रख सकते हैं, गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद को एक राष्ट्रीय नेता के रूप में पुन: स्थापित किया और भारत के प्रधानमंत्री बने। ये अतिरिक्त कारक इस बात पर जोर देते हैं कि राजनीतिक प्रभाव पूरी तरह से किसी की पिछली स्थिति से निर्धारित नहीं होता है, बल्कि अनुकूलन क्षमता, लचीलापन और उभरती राजनीतिक वास्तविकताओं के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता से भी निर्धारित होता है। जो नेता इन कारकों से प्रभावी ढंग से निपटते हैं, वे मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के बाद भी लंबे समय तक भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण व्यक्ति बने रह सकते हैं। जो नेता नागरिक समाज संगठनों, गैर सरकारी संगठनों और सामुदायिक नेताओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं, वे जमीनी स्तर की चिंताओं और मुद्दों से जुड़े रह सकते हैं। नागरिक समाज संगठनों के साथ नीतीश कुमार के जुड़ाव ने उन्हें सामाजिक

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

और विकास चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने की अनुमति दी है।

वहीं जो नेता तकनीकी प्रगति और डिजिटल शासन उपकरणों को अपनाते हैं, वे प्रगति और नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर जनमानस में अपने लिए लम्बे समय तक छाप छोड़ने में सफल रहते हैं जैसे चंद्रबाबू नायडू के प्रौद्योगिकी-संचालित शासन पर ध्यान देने के कारण उन्हें ष्साइबर बाबूष उपनाम मिला, जिन्होंने तीन कार्यकाल के लिए आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया. उनका कार्यकाल 1 सितंबर 1995 से 11 अक्टूबर 1999, दूसरा कार्यकाल 11 अक्टूबर 1999 सेर 13 मई 2004 तक रहा.5 10 वर्षों के बाद, उनका तीसरा कार्यकाल 2014 से 2019 तक रहा. नायडू ने सूचना-प्रौद्योगिकी, नवाचार और जैव-प्रौद्योगिकी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिससे कल्याण उन्मुख शासन के बजाय आर्थिक सुधार और उदारीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ, साथ ही कृषि और सिंचाई पर थोड़ा सा ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें प्रौद्योगिकी और कृषि के एकीकरण पर जोर दिया गया, नायडू ने सभी राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन में लगभग 24% रिकॉर्ड वृद्धि के साथ सर्वश्रेष्ठ पर्यटन प्रदर्शन करने वाले राज्य का सम्मान जीता।[6] रियल टाइम गवर्नेंस सोसाइटी नायडू की एक भारतीय ई-गवर्नेंस पहल है।[7] आंध्र प्रदेश में एन. चंद्रबाबू नायडू की सरकार ने कमजोर समूहों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किए। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम द्वारा स्विट्जरलैंड के दावोस से प्रकाशित वर्ल्ड लिंक पत्रिका ने उन्हें राजनीतिक नेताओं की अपनी 'ड्रीम कैबिनेट' में शामिल किया।[8]

ये समसामयिक रणनीतियाँ शासन की उभरती प्रकृति और उभरते मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता पर जोर देती हैं। पूर्व मुख्यमंत्री जो इन दृष्टिकोणों को प्रभावी ढंग से लागू करते हैं, वे अपने राज्यों के विकास और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकते हैं, लगातार बदलते राजनीतिक परिदृश्य में प्रभावशाली और प्रासंगिक बने रह सकते हैं। भारतीय राजनीति में शक्तिशाली पूर्व मुख्यमंत्रियों को कैसे दरकिनार किया जाता है, इसकी गतिशीलता को समझने के लिए विशिष्ट मामलों, पार्टी संरचनाओं, क्षेत्रीय कारकों और व्यक्तिगत नेतृत्व शैलियों के सूक्ष्म विश्लेषण की आवश्यकता है, यह संभव है कि वसुंधरा राजे और शिवराज सिंह को मुख्यमंत्री बनने के लिए आगे मौका नहीं दिया गया क्योंकि उन्होंने अपनी-अपनी पार्टियों के शीर्ष नेता के लिए संभावित चुनौती या प्रतिद्वंद्विता पेश की थी। कई राजनीतिक संदर्भों में, पार्टियाँ ऐसे व्यक्तियों को बढ़ावा देने से बचना पसंद कर सकती हैं जो संभावित रूप से मौजूदा नेतृत्व पदानुक्रम को चुनौती दे सकते हैं या पार्टी की आंतरिक गतिशीलता को बाधित कर सकते हैं। यह निर्णय विभिन्न कारकों से प्रभावित हो सकता है, जिसमें पार्टी की एकता बनाए रखने, आंतरिक सत्ता संघर्ष को रोकने या वर्तमान नेतृत्व के अधिकार को संरक्षित करने की चिंताएं शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, शीर्ष नेता उन लोगों को बढ़ावा देना पसंद कर सकते हैं जो पार्टी के भीतर स्वतंत्र शक्ति केंद्र के रूप में उभरने के बजाय अपने स्वयं के दृष्टिकोण और एजेंडे के साथ अधिक जुड़े हुए हैं। प्रत्येक राजनीतिक नेता की यात्रा अनोखी होती है, जो इन कारकों और उनकी व्यक्तिगत पसंद और रणनीतियों के संयोजन से प्रभावित होती है। इन गतिशीलता में व्यापक अंतर्दृष्टि राजनीतिक जीवनियों, अकादमिक अनुसंधान और विशिष्ट राजनीतिक परिदृश्यों और विकासों के विश्लेषण में पाई जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. योगेन्द्र यादव- `I worry about the coming assembly election in West Bengal', https://theprint.in/opinion/i-worry-about-2021-bengal-election-you-should-too-yogendra-yadav/610830/
2. योगेन्द्र यादव- उपर्युक्त
3. 'अशोक चव्हाण बने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री'। रीडिफ। 5 दिसंबर 2008
4. 'कांग्रेस ने तीनों मुख्यमंत्रियों को बरकरार रखा, खांडू, हुव ने ली शपथ' । रीडिफ। 25 अक्टूबर 2009
5. एन चंद्रबाबू नायडू टाइम लाइन, एनसीबीएन.इन
6. एस., नागेश कुमार (24 अक्टूबर 2003)। 'एक विस्फोट और उसका सदमा'। अग्रिम पंक्ति . 4 अप्रैल 2021 को मूल से संग्रहीत
7. 'कैश के बदले वोट मामला: केसीआर-नायडू युद्ध बढ़ा' -इंडिया टुडे : 9 जून 2015
8. https://www.downtoearth.org.in/coverage/the-lone-crusader-19330

****